International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(4): 154-157
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 18-08-2025
Accepted: 25-08-2025
Publish : 27-08-2025

प्रो. राजू बागलकोट
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, डीन, कला संकाय,कर्नाटक राज्य-अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर (कर्नाटक)

Correspondence:
प्रो. राजू बागलकोट
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, डीन, कला संकाय,कर्नाटक राज्य-अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर (कर्नाटक)

गीतांजलि श्री के उपन्यासों में समकालीन विमर्श : स्त्री, समाज और सांस्कृतिक चेतना

प्रो. राजू बागलकोट

सार

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में गीतांजलि श्री का नाम उन रचनाकारों में प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने भारतीय समाज, स्त्री-अस्तित्व, सांस्कृतिक स्मृतियों और बदलते सामाजिक यथार्थ को नवीन शिल्प एवं संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यास केवल घटनाओं का आख्यान नहीं हैं, बल्कि वे मनुष्य के अस्तित्व, स्मृति, इतिहास, भाषा और संस्कृति के गहन अंतःसंबंधों का रचनात्मक अन्वेषण प्रस्तुत करते हैं। गीतांजलि श्री की रचनात्मक दृष्टि स्त्री-विमर्श को केवल अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं रखती, बल्कि वह स्त्री की आत्मचेतना, उसकी वैचारिक स्वतंत्रता और उसकी सांस्कृतिक भूमिका को व्यापक सामाजिक संदर्भों में समझने का प्रयास करती है। उनके उपन्यासों में स्त्री, समाज और संस्कृति एक-दूसरे से गहरे जुड़े हुए विमर्श हैं, जो आधुनिक भारतीय जीवन की जटिलताओं को उद्घाटित करते हैं। प्रस्तुत आलेख में गीतांजलि श्री के प्रमुख उपन्यासों के आधार पर समकालीन स्त्री-विमर्श, सामाजिक यथार्थ तथा सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द: गीतांजलि श्री, समकालीन विमर्श, स्त्री-विमर्श, सांस्कृतिक चेतना, समाज, हिंदी उपन्यास, स्मृति, अस्मिता।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का समकालीन दौर अनेक प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, सांप्रदायिक तनाव, विस्थापन तथा बदलते पारिवारिक संबंधों ने मनुष्य के जीवन-मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों में हिंदी उपन्यास ने समाज के विविध अंतर्विरोधों को अभिव्यक्ति दी है। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने विशेष रूप से स्त्री-अस्तित्व, लैंगिक असमानता, सांस्कृतिक पहचान तथा सामाजिक संरचनाओं पर गंभीर प्रश्न उठाए हैं।

गीतांजलि श्री का कथा-साहित्य इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ पारंपरिक कथाशिल्प से अलग एक ऐसी वैचारिक संरचना निर्मित करती हैं जिसमें स्मृति, इतिहास, भाषा, मिथक और वर्तमान सामाजिक यथार्थ परस्पर संवाद करते दिखाई देते हैं। उनके यहाँ स्त्री केवल पीड़िता नहीं है; वह विचारशील, प्रश्नाकुल, प्रतिरोधी तथा सृजनात्मक चेतना की वाहक है। उनके उपन्यास सामाजिक संरचनाओं की आलोचना करते हुए मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता की स्थापना का प्रयास करते हैं।

गीतांजलि श्री का रचनात्मक व्यक्तित्व

गीतांजलि श्री समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की विशिष्ट रचनाकार हैं। उन्होंने हिंदी उपन्यास को नई भाषा, नवीन शिल्प तथा गहन वैचारिक दृष्टि प्रदान की है। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'तिरोहित', 'खाली जगह' तथा 'रेत समाधि' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के भीतरी संसार को अधिक महत्व देती हैं। स्मृति, मौन, अकेलापन, पहचान, इतिहास और सांस्कृतिक अनुभव उनके कथा-संसार के प्रमुख आधार हैं। उनकी भाषा अत्यंत काव्यात्मक, बहुस्तरीय तथा प्रतीकात्मक है, जो पाठक को निरंतर नए अर्थों की ओर ले जाती है।

समकालीन स्त्री-विमर्श

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श केवल स्त्री-अधिकारों की माँग या पुरुष-वर्चस्व के विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के समग्र व्यक्तित्व, उसकी अस्मिता, आत्मनिर्णय, सामाजिक सहभागिता तथा सांस्कृतिक अस्तित्व की पुनर्स्थापना का व्यापक बौद्धिक आंदोलन है। यह विमर्श स्त्री को केवल परिवार अथवा समाज की परिधि में स्थित प्राणी के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र चिंतनशील मनुष्य के रूप में स्वीकार करता है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श ने नई वैचारिक ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं, जिनमें स्त्री के अनुभव, उसकी स्मृतियाँ, उसकी भाषा, उसकी देह, उसकी इच्छाएँ और उसकी आत्मचेतना साहित्यिक विमर्श के केंद्र में आ गई हैं।

गीतांजलि श्री का कथा-साहित्य इसी समकालीन स्त्री-विमर्श का अत्यंत सशक्त प्रतिनिधि है। वे स्त्री को केवल उत्पीड़न और करुणा की प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति, वैचारिक स्वतंत्रता और जीवन-दृष्टि को अत्यंत सूक्ष्मता से उद्घाटित करती हैं। उनके यहाँ स्त्री का संघर्ष केवल बाहरी सामाजिक बंधनों से मुक्ति का संघर्ष नहीं है, बल्कि अपने भीतर जमी हुई उन सांस्कृतिक रूढ़ियों और मानसिक अवरोधों से मुक्त होने का भी संघर्ष है, जिन्हें समाज ने सदियों से स्त्री के स्वभाव और कर्तव्य का नाम देकर स्वीकार्य बना दिया है। इस प्रकार गीतांजलि श्री का स्त्री-विमर्श सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक—तीनों स्तरों पर विकसित होता है।

उनका चर्चित उपन्यास 'माई' भारतीय मध्यवर्गीय पारिवारिक संरचना का अत्यंत प्रभावशाली दस्तावेज़ है। इस उपन्यास की 'माई' केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय परिवारों में उपस्थित उस संपूर्ण स्त्री-समुदाय का प्रतीक है, जो अपने श्रम, त्याग और समर्पण से परिवार की नींव को मजबूत बनाए रखता है, किंतु स्वयं अपनी पहचान से वंचित रह जाता है। घर की प्रत्येक व्यवस्था उसके श्रम पर आधारित है, परिवार का प्रत्येक सदस्य उसके स्नेह और सेवा का उपभोग करता है, किंतु उसके अस्तित्व, उसकी इच्छाओं और उसके स्वप्नों की कोई स्वतंत्र पहचान नहीं बन पाती।

गीतांजलि श्री अत्यंत सूक्ष्म ढंग से यह दिखाती हैं कि भारतीय समाज में स्त्री का शोषण केवल प्रत्यक्ष हिंसा के माध्यम से नहीं होता, बल्कि प्रेम, कर्तव्य, संस्कार, मर्यादा और त्याग जैसे सांस्कृतिक मूल्यों की आड़ में भी उसकी स्वतंत्रता को सीमित किया जाता है। 'माई' का मौन इसी सांस्कृतिक संरचना का सबसे प्रभावशाली प्रतीक है। यह मौन केवल उसकी विवशता नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की आलोचना भी है जिसमें स्त्री बोलने से पहले दूसरों के बारे में सोचती है और स्वयं को सबसे अंत में रखती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि गीतांजलि श्री स्त्री को दया की पात्र नहीं बनातीं। उनके स्त्री पात्रों में आत्मसम्मान, संवेदनशीलता और वैचारिक प्रतिरोध की गहरी चेतना विद्यमान रहती है। उनका प्रतिरोध हमेशा आक्रामक नहीं होता; अनेक बार वह मौन, स्मृति, आत्मसंवाद और जीवन के छोटे-छोटे निर्णयों के माध्यम से व्यक्त होता है। यही कारण है कि उनके स्त्री पात्र पारंपरिक स्त्री-छवियों से अलग दिखाई देते हैं। वे अपनी परिस्थितियों को समझते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं और धीरे-धीरे अपने अस्तित्व की स्वतंत्र पहचान निर्मित करते हैं।

गीतांजलि श्री के उपन्यासों में स्त्री केवल परिवार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज, संस्कृति, इतिहास और राजनीति के साथ भी उसका गहरा संबंध स्थापित होता है। उनके यहाँ स्त्री की चेतना व्यक्तिगत अनुभवों से आगे बढ़कर सामाजिक चेतना का रूप ग्रहण करती है। इस दृष्टि से उनका स्त्री-विमर्श व्यक्तिगत मुक्ति से अधिक सामाजिक परिवर्तन का विमर्श बन जाता है।

विशेष रूप से **'रेत समाधि'** में वृद्ध स्त्री पात्र के माध्यम से लेखिका ने यह स्थापित किया है कि स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय का अधिकार केवल युवावस्था तक सीमित नहीं है। जीवन के अंतिम पड़ाव पर भी स्त्री अपनी इच्छाओं, स्मृतियों और निर्णयों के आधार पर नया जीवन चुन सकती है। यह दृष्टि भारतीय समाज में प्रचलित उन धारणाओं का प्रभावशाली प्रतिवाद है, जिनमें वृद्ध स्त्री को केवल परिवार की परिधि तक सीमित मान लिया जाता है। 'रेत समाधि' की नायिका सीमाओं—चाहे वे सामाजिक हों, सांस्कृतिक हों या राजनीतिक—को पार करती हुई मनुष्य की सार्वभौमिक स्वतंत्रता का प्रतीक बन जाती है।

इस प्रकार गीतांजलि श्री का स्त्री-विमर्श स्त्री की अस्मिता, समानता और स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक मुक्ति केवल कानूनी अधिकारों से नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पुनर्विचार और मानवीय संवेदनशीलता के विकास से संभव है। उनके उपन्यास स्त्री को समाज के केंद्र में स्थापित करते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि किसी भी सभ्य समाज की प्रगति स्त्री की गरिमा, उसकी भागीदारी और उसकी स्वतंत्र पहचान के बिना संभव नहीं है।

गीतांजलि श्री के उपन्यास समकालीन भारतीय समाज के जटिल यथार्थ का अत्यंत संवेदनशील और बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनके यहाँ समाज कोई स्थिर, एकरेखीय या आदर्शीकृत संरचना नहीं है, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील, अंतर्विरोधों से भरी और अनेक स्तरों पर संघर्षरत सामाजिक व्यवस्था के रूप में उपस्थित होता है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, उपभोक्तावाद, सांप्रदायिकता, शहरीकरण तथा बदलते पारिवारिक संबंधों ने आधुनिक समाज को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। गीतांजलि श्री इन परिवर्तनों को केवल सामाजिक घटनाओं के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उनके मानवीय और सांस्कृतिक प्रभावों का सूक्ष्म विश्लेषण करती हैं।

उनके कथा-साहित्य में आधुनिक मनुष्य का अकेलापन, पारिवारिक विघटन, संवेदनहीनता, संवादहीनता तथा संबंधों का कृत्रिम स्वरूप बार-बार सामने आता है। आधुनिक जीवन की तीव्र गति, प्रतिस्पर्धा और बाजारवादी संस्कृति ने व्यक्ति को आर्थिक रूप से सक्षम तो बनाया है, किंतु भावनात्मक स्तर पर वह पहले की अपेक्षा अधिक अकेला और असुरक्षित हो गया है। यही सामाजिक विडंबना उनके उपन्यासों का एक प्रमुख विषय है।

'हमारा शहर उस बरस' सांप्रदायिकता और सामाजिक विघटन पर आधारित हिंदी के महत्वपूर्ण उपन्यासों में गिना जाता है। इसमें लेखिका ने सांप्रदायिक दंगों के माध्यम से केवल हिंसा का चित्रण नहीं किया है, बल्कि उस मानसिक भय, अविश्वास और असुरक्षा को भी व्यक्त किया है, जो समाज की आत्मा को भीतर से खंडित कर देता है। जब धर्म और राजनीति मिलकर मनुष्य की पहचान तय करने लगते हैं, तब मानवीय संबंध कमजोर पड़ने लगते हैं। पड़ोसी, मित्र और सहकर्मी अचानक संदेह की दृष्टि से देखे जाने लगते हैं। लेखिका इस विघटन को अत्यंत मार्मिक संवेदना के साथ प्रस्तुत करती हैं और संकेत देती हैं कि सांप्रदायिकता का सबसे बड़ा शिकार मनुष्यता होती है।

इसी प्रकार 'खाली जगह' आधुनिक जीवन की उस रिक्तता का प्रतीकात्मक आख्यान है, जो हिंसा, विस्थापन और असामयिक मृत्यु के बाद मनुष्य के भीतर स्थायी रूप से बस जाती है। यहाँ 'खाली जगह' केवल किसी व्यक्ति की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि स्मृतियों, संबंधों, विश्वास और सांस्कृतिक निरंतरता के टूट जाने का प्रतीक है। लेखिका यह दर्शाती हैं कि हिंसा केवल शारीरिक विनाश नहीं करती, बल्कि मनुष्य के भीतर विश्वास, अपनत्व और सुरक्षा की भावना को भी नष्ट कर देती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने ही समाज में अजनबी बन जाता है।

गीतांजलि श्री आधुनिक समाज में बढ़ती उपभोक्तावादी मानसिकता की भी अप्रत्यक्ष आलोचना करती हैं। उनके अनुसार जब जीवन का मूल्य केवल आर्थिक सफलता, प्रतिष्ठा और उपभोग तक सीमित हो जाता है, तब संवेदनाएँ, पारिवारिक संबंध और सांस्कृतिक मूल्य धीरे-धीरे क्षीण होने लगते हैं। इस स्थिति में मनुष्य बाहरी रूप से सफल दिखाई देता है, किंतु भीतर से गहरे अकेलेपन और असंतोष का अनुभव करता है।

उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किसी वैचारिक प्रचार या घोषणापत्र की शैली में नहीं मिलता। वे किसी एक विचारधारा का समर्थन करने के बजाय जीवन की बहुस्तरीय जटिलताओं को उनके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनके पात्र पूर्णतः अच्छे या बुरे नहीं होते, बल्कि परिस्थितियों, संस्कारों और सामाजिक दबावों से निर्मित जटिल व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि गीतांजलि श्री का कथा-साहित्य समकालीन भारतीय समाज का केवल दर्पण नहीं है, बल्कि उसकी गहन आलोचनात्मक व्याख्या भी है। वे सामाजिक परिवर्तन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को समान संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती हैं तथा यह विश्वास व्यक्त करती हैं कि संवाद, सह-अस्तित्व, करुणा और मानवीय संवेदना ही समाज को विघटन से बचा सकते हैं। इसी कारण उनके उपन्यास समकालीन सामाजिक विमर्श के महत्वपूर्ण दस्तावेज़ के रूप में स्थापित होते हैं।

गीतांजलि श्री के उपन्यासों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी सांस्कृतिक चेतना है। उनके यहाँ संस्कृति केवल परंपराओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवंत अनुभव है। वे भारतीय संस्कृति को स्थिर और जड़ रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उसे परिवर्तनशील, संवादशील और बहुलतावादी रूप में प्रस्तुत करती हैं।

उनके कथा-साहित्य में स्मृति अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्मृति व्यक्ति को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है। अतीत और वर्तमान का यह संवाद उनके उपन्यासों को गहरी वैचारिक ऊँचाई प्रदान करता है। वे इतिहास को केवल घटनाओं का क्रम नहीं मानतीं, बल्कि उसे मनुष्य के अनुभवों और स्मृतियों के रूप में पुनर्परिभाषित करती हैं।

'रेत समाधि' में विभाजन, सीमाएँ, राष्ट्र, पहचान और मानवीय संबंधों का अत्यंत व्यापक सांस्कृतिक विमर्श मिलता है। वृद्ध नायिका की सीमा-पार यात्रा केवल भौगोलिक यात्रा नहीं, बल्कि स्मृति, इतिहास और मनुष्यता की यात्रा बन जाती है। यह उपन्यास स्थापित सीमाओं और पहचान की संकीर्ण अवधारणाओं पर गंभीर प्रश्न उठाता है तथा मानवीय सह-अस्तित्व की संभावना को रेखांकित करता है।

गीतांजलि श्री की भाषा हिंदी उपन्यास परंपरा में विशिष्ट स्थान रखती है। उनकी भाषा अत्यंत काव्यात्मक, प्रतीकात्मक और बहुअर्थी है। वे सामान्य घटनाओं को भी गहन दार्शनिक अर्थ प्रदान करती हैं। उनके यहाँ मौन भी भाषा का महत्वपूर्ण रूप है।

उनकी कथन-प्रविधि रैखिक न होकर बहुस्तरीय है। स्मृति, स्वप्न, आत्मसंवाद, फ्लैशबैक तथा प्रतीकों का व्यापक प्रयोग उनके उपन्यासों को आधुनिक कथाशिल्प प्रदान करता है। वे समय को सीधी रेखा में नहीं, बल्कि अनुभवों की परतों में प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनका कथा-साहित्य पाठक से सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा करता है।

समकालीन विमर्शों की बहुआयामी उपस्थिति

गीतांजलि श्री के उपन्यास केवल स्त्री-विमर्श तक सीमित नहीं हैं। उनमें अनेक समकालीन विमर्श समानांतर रूप से उपस्थित हैं—

- स्त्री-अस्मिता और लैंगिक समानता
- सांप्रदायिकता और सामाजिक विघटन
- स्मृति और इतिहास का पुनर्पाठ
- वृद्धावस्था और मानवीय गरिमा
- विस्थापन और पहचान का संकट

- सांस्कृतिक बहुलता और सह-अस्तित्व
- परिवार की बदलती संरचना
- आधुनिकता और परंपरा का अंतर्द्वंद्व

इन सभी विमर्शों का केंद्र अंततः मनुष्य और उसकी मानवीय संवेदना है। यही उनके साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति है।

गीतांजलि श्री का कथा-साहित्य हिंदी उपन्यास को नई वैचारिक दिशा प्रदान करता है। वे पारंपरिक यथार्थवाद से आगे बढ़कर मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक स्तर पर समाज की व्याख्या करती हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री-विमर्श किसी संकीर्ण वैचारिक आग्रह का परिणाम नहीं, बल्कि व्यापक मानवीय विमर्श का अंग है।

यद्यपि कुछ आलोचकों ने उनकी भाषा और शिल्प को जटिल माना है, किंतु यही जटिलता आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम बनती है। उनका साहित्य पाठक से धैर्य, संवेदनशीलता और वैचारिक सक्रियता की अपेक्षा करता है। उनकी रचनाएँ बार-बार पढ़े जाने पर नए अर्थ खोलती हैं।

गीतांजलि श्री के उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने स्त्री, समाज और संस्कृति को नई दृष्टि से देखने की प्रेरणा दी है। उनके यहाँ स्त्री केवल सामाजिक संरचना की पीड़ित इकाई नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक है। समाज केवल संस्थाओं का समूह नहीं, बल्कि जीवंत मानवीय संबंधों का संसार है। संस्कृति केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान में निरंतर विकसित होने वाली चेतना है।

उनकी रचनाएँ यह स्थापित करती हैं कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की आत्मालोचना, सांस्कृतिक पुनर्विचार और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना भी है। आज जब विश्व अनेक प्रकार के विभाजनों, हिंसा, असहिष्णुता और सांस्कृतिक संकटों से जूझ रहा है, तब गीतांजलि श्री का साहित्य संवाद, सह-अस्तित्व, संवेदना और मानवीय गरिमा का महत्वपूर्ण संदेश देता है। इस दृष्टि से उनके उपन्यास समकालीन विमर्शों की सशक्त अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक दस्तावेज सिद्ध होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. गीतांजलि श्री – माई
2. गीतांजलि श्री – हमारा शहर उस बरस
3. गीतांजलि श्री – तिरोहित
4. गीतांजलि श्री – खाली जगह
5. गीतांजलि श्री – रेत समाधि
6. नामवर सिंह – कहानी : नई कहानी
7. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास-दृष्टि
8. सुधीश पचौरी – उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श
9. प्रभा खेतान – स्त्री उपेक्षिता
10. राजकिशोर (सं.) – स्त्री के लिए जगह